ग्रामीण प्रजनन दर को प्रभावित करने वाले घटकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

रामचन्द्र राणा

शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड

सारांश

किसी देश का आर्थिक विकास प्रजनन दर से भी प्रभावित होता है। प्रजनन दर एक जनांकिकीय घटना है। इससे परिवार के सदस्यों की भूमिका में परिवर्तन आता है। प्रजनन दर का मतलब किसी स्त्री या स्त्री समुह द्वारा किसी विशिष्ट समय अवधी में कुल जन्म लिए जीवित बच्चों की वास्तविक संख्या से है। प्रजनन दर को प्रभावित करने वाले घटकों में शैक्षणिक स्तर, वैवाहिक स्तर, नगरीकरण, आर्थिक स्तर, व्यवसाय, धर्म एवं सामाजिक रीतिरिवाज, सामाजिक गतिशिलता, मृत्यु दर इत्यादि महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध पत्र में इन्ही घटकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन है।

शब्द कुंजी: – प्रजनन दर, कामजन्य आवश्यकता, वैवाहिक अवधि, सहवास, संतानोत्पादकता

I. परिचयः–

प्रजनन दर एक जनांकिकीय घटना है। इससे परिवार के सदस्यों की भूमिका में परिवर्तन आता है। प्रजनन दर का मतलब किसी स्त्री या स्त्रियों के समुह द्वारा किसी विशिष्ट समयावधि में कुल जन्म लिए जीवित बच्चों की वास्तविक संख्या से है। जन्मदर की माप बच्चों की संख्या से होती है अथवा एक दी हुई निश्चित अवधी पर जीवित जन्म लिए बच्चों की बारंबारता ही जन्म दर की माप है। बर्नार्ड बेंजामिन ने जन्मदर को स्पष्ट करते हुए कहा है कि 'जन्मदर उस दर की माप है जिसमें कोई जनसंख्या जन्म द्वारा जनसंख्या में वृद्धि करती है तथा सामान्यतया, जनसंख्या के किसी वर्ग के विवाहित

दम्पत्तियों की संख्या शिशु जनन क्षमता वाली, आयु वर्ग की महिलाओं की संख्या अर्थात् प्रजननता की क्षमता उपयुक्त मापदंड हो सकता है।' जार्ज बार्क्ले ने इस संबंध में कहा है कि 'प्रजनन दर जीवित जन्म की संख्या पर आधारित जनसंख्या की यथार्थ स्तर की क्रिया विधि है।' प्रजनन दर तथा संतानोत्पादकता में अंतर है। संतानोत्पादकता से तात्पर्य महिलाओं की बच्चों को जन्म देने की शक्ति से है। चाहे वह उसने बच्चों को जन्म दिया हो अथवा न दिया हो, लेकिन जन्म दर का तात्पर्य वास्तव में बच्चों को जन्म देने से है। वैसे जन्म एक जैविकीय प्रक्रिया का परिणाम है, परंतु जन्म दर सिर्फ जैविकीय घटकों से ही प्रभावित नहीं होती, बल्कि जन्म दर को सामाजिक परिस्थितियों का परिणाम माना जाता है। समाज में फैली हुई सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा नैतिक परंपराएं आदि जन्म दर को प्रभावित करती है।

जन्म दर को प्रभावित करने वाले घटकों के संबंध में विद्वानों के बीच काफी विभिन्नताएं हैं लेकिन इन विभिन्नताओं के बावजूद भी इसको प्रभावित करने वाले मुख्य घटक इस प्रकार है –

II. ग्रामीण प्रजनन दर को प्रभावित करने वाले घटक

a) **विवाह की आयु** – विवाह महिला एवं पुरूष की कामजन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सूत्रबद्ध करने वाली एक ऐसी सामाजिक संस्था है, जो मुख्य रूप से प्रजनन प्रक्रिया से संबंधित है। प्रजनन दर इस बात पर निर्भर करती है कि विवाह के लिए निर्धारित आयु क्या है? यदि विवाह की उम्र कम है, तो सामान्य रूप से प्रजनन दर की संभावना अधिक होती है। सामान्य रूप से प्रजनन दर संबंधी निष्कर्ष का आधार उम्र विशिष्ट प्रजनन दर होती है। ज्यादातर जनसंख्या शास्त्रीयों का मानना है की प्रजनन दर के अध्ययन के दृष्टि से विवाह की उम्र की अपेक्षा विवाह एवं वैवाहिक जीवन की अवधि अधिक महत्वपूर्ण है। प्रोफेसर डोनाल्ड ने संयुक्त राज्य अमेरिका के अश्वेत जाति एवं श्वेत जातियों की वैवाहिक अवधि तथा जन्म लिए बच्चों की संख्या में धनात्मक सह – संबंध पाया। अर्थात् जैसे – जैसे वैवाहिक अवधि बढ़ती जाती है, बच्चों की संख्या श्वेत एवं अश्वेत दोनों में बढ़ती जाती है। अतः जिस तरह बढ़ती हुई उम्र के साथ जन्म लिए बच्चों की संख्या

बढ़ती जाती है, ठीक उसी प्रकार बढ़ती हुई वैवाहिक आयु अवधि के अनुसार भी बच्चों की जनसंख्या बढ़ती जाती है।

b) **तलाक तथा अलगाव**– दुनिया के सभी समाज में वैवाहिक संबंध को समाप्त करने के लिए कुछ न कुछ व्यवस्था बनाई गई है। तलाक तथा अल्गाव उसी व्यवस्था का हिस्सा है। ऐसा देखा गया है कि तलाक तथा अल्गाव की जितनी अधिक आवृति होगी, प्रजनन दर में उतनी ही कमी आएगी। रोबॅर्टस ने अपने अध्ययन में पाया की– क. जिन व्यक्तियों में लगातार साथ रहने की प्रवृति होती है। उनमें प्रजनन दर सबसे अधिक होती है। ख. जो मनुष्य सामान्य रूप से साथ रहते है, उनमें प्रजनन दर उपर्युक्त क. की तुलना में कम होती है। ग. ऐसे व्यक्ति जो कभी–कभी साथ रहते है, उसमें प्रजनन दर सबसे कम होती है।

c) **वैधव्य अथवा विधुर** – वैधव्य अथवा विधुर होना बुढ़ापे के लिए आम बात है, लेकिन यौवन अवस्था में यह दुर्भाग्यपूर्ण घटना है। यदि कोई महिला विधवा हो जाती है, तो स्वभाविक बात है कि वह उसी क्षण अपनी प्रजननता खो देती है। वैधव्य से प्रजनन दर पर कितना प्रभाव पड़ेगा, यह इस बात पर निर्भर करेगा की उस समाज में पुनर्विवाह की क्या व्यवस्था है? यदि कोई महिला पति के मरने के बाद जल्दी ही दूसरा विवाह कर लेती है, तो उसकी प्रजनन दर पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा। उसी प्रकार यह तथ्य विधुर पर भी लागू होता है।

d) **प्रसव के बाद के प्रतिबंध** – प्रसव के बाद सहवास के संबंध में लगभग प्रत्येक समाज में कुछ सामाजिक, धार्मिक या नैतिक प्रतिबंध लगाए जाते हैं। सभी समाज में इन प्रतिबंधों की समय अवधि अलग अलग होती है। किसी समाज में यह प्रतिबंध कुछ सप्ताह के लिए होता है तो कहीं इसकी अवधी दो या तीन वर्षों की है। जनसंख्या शास्त्रीयों का मानना है कि इन प्रतिबंधों से निश्चत रूप से प्रजनन दर में कमी होती है। भारतीय संबंध में प्राचीन परंपरा रही है कि जब तक मां अपने बच्चे को दुध पिलाती है, सहवास की क्रिया नहीं की जानी चाहिए इससे बच्चे के लालन पालन पर खराब प्रभाव पड़ता है। भारतीय संदर्भ में देखा जाए तो ग्रामीण समाज में आज भी अधिकांश महिलाएं प्रसव के लिए माईके चली जाती है तथा वहां से तब लौटकर आती हैं जब बच्चा कुछ महीने का हो जाता है।

e) **मासिक धर्म तथा अन्य कारणों से अलगाव** – दुनियां में कुछ जातियों को छोड़कर अधिकांश जातियों में यह धारणा है कि मासिक धर्म की समय अवधि में सहवास नहीं करना चाहिए। समाज में इस प्रकार के प्रतिबंध का मुख्य कारण बिमारियों का डर एवं घृणा है। हिन्दु समाज में तो यहां तक देखा जाता है कि मसिक धर्म के समयावधि में महिलाओं को भोजन आदि कार्यो से भी दूर रखा जाता है। अतः मासिक धर्म के समयावधि में लगे प्रतिबंध के कारण भी प्रजनन दर पर प्रभाव पड़ता है। बहुत ऐसे समाज हैं जिसमें अनुष्ठान, पर्व त्योहार, पुजा पाठ इत्यादि के दिनों में सहवास नहीं किया जाता है। इसे उत्सव संबंध अलगाव कहा जाता है। इसका भी प्रभाव प्रजनन दर पर पड़ता है।

f) **संयम** – दुनिया के किसी भी समाज में जीवन पर्यंत सहवास से वंचित रखने की परंपरा नहीं है। कई धर्मों ने जीवन के प्रथम 25 वर्षों में ब्रह्मचर्य एवं संयमित जीवन के महत्व को प्रतिपादित किया है। हिन्दू, बौद्ध एवं जैन धर्मों में ब्रह्मचर्य को बहुत अधिक महत्व दिया गया है। भारत जैसे देशों में लड़के एवं लड़कीयों का विवाह की न्यूनतम आयु कानून तय कर दिया गया है। इसका भी प्रजनन दर पर प्रभाव पड़ता है।

g) **बहुपत्नी प्रथा** – बहुपत्नी प्रथा प्रजनन दर को प्रभावित करने वाली सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक है। वर्तमान समय में शिक्षा के प्रसार से इस प्रथा की प्रचलन में कमी आई है। प्रायः ऐसा देखा जाता है कि एक पत्नी प्रथा की तुलना में बहुपत्नी प्रथा में प्रति स्त्री प्रजनन दर कम रहती है, क्योंकि पुरूष में प्रति स्त्री सहवास की आवृति कम हो जाती है। लेकिन कुछ जनसंख्याशास्त्रीयों का ऐसा मानना है कि आंकड़े इस तथ्य की पुष्टी नहीं करते की बहुपत्नी प्रथा के अंतर्गत प्रजनन दर घट जाती है।

h) **निरोधक उपाय** – प्राचीन समय में संयम तथा अविवाहित जीवन की प्रजनन पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में स्वीकार किया गया था। लेकिन सभ्यता के विकास के साथ – साथ इसका स्थान गर्भ निरोधक तथा बंध्याकरण से संबंधित साधन तथा विधियां लेती जा रही है। इसक पिछे विद्वानों का यह तर्क है कि संयम तथा अविवाहित जीवन कष्टकारी होते है और लंबे समय में

इसका प्रभाव स्वास्थ पर अच्छा नहीं पड़ता है। अतः गर्भ निरोधक द्वारा व्यक्ति बगैर यौन सुख से वंचित हुए अपने परिवार को नियोजित कर सकते हैं। परिवार को नियोजित करने के संसाधन, विधियां तथा इसके प्रति लोगों की जागरूकता निश्चित रूप से उच्च प्रजनन दर को नियंत्रित करेगी।

i) **शैक्षिक स्तर** – शिक्षा प्रजनन दर को निर्धारित करने वाले घटकों में सबसे प्रमुख घटक है। यह प्रजनन दर को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा व्यक्ति को ज्ञानवान तथा युक्तिपरक बनाकर उसे प्रेरणा देती है। शिक्षित लोग छोटे परिवार के महत्व को अच्छी तरह से समझता है तथा परिवार को नियंत्रित करने को प्रेरित होता है। वे अपने परिवार के वर्तमान तथा भविष्य के प्रति भी महत्वाकांक्षी होता है। शिक्षित व्यक्ति यह सोच सकता है कि उसके परिवार का आकार कितना बड़ा होना चाहिए? वे अपने संसाधनों के आधार पर यह तय करते हैं कि कितने बच्चों का वे अच्छी प्रकार से लालन पालन कर सकते हैं। अतः जिस समाज में शैक्षिक स्तर उंचा होगा वहां प्रजनन दर कम होगा और जहां शैक्षिक स्तर निम्न होगा वहां प्रजनन दर उच्च होगा।

j) **भौगोलिक कारक** – किसी देश की भौगोलिक स्थिति अर्थात् जलवायु, भू–संरचना एवं उपलब्ध खाद्य सामग्री भी प्रजनन दर को प्रभावित करती है। भूमध्य रेखा के करीब गर्म क्षेत्रों में प्रजनन दर शीत कटिबंधीय क्षेत्रों की तुलना में अधिक होती है। उष्ण कटिबंधीय क्षेत्र की जलवायु गर्म होने के कारण वहां की लड़कीयों का शारीरीक विकास कम उम्र में हीं हो जाता है तथा वे शीघ्र ही शिशु जनन क्षमता को प्राप्त कर लेती है, जिससे उनका मातृत्व अवधि बढ़ जाता है। यही कारण है कि गर्म क्षेत्रों में प्रजनन दर अत्यधिक होती है। ठीक इसके विपरित शीत कटिबंधीय क्षेत्रों में लड़कीयों का शारीरिक विकास देर से होता है जिससे शिशु जनन उम्र देर से प्राप्त होती है। अतः इन क्षेत्रों में प्रजनन दर तुलनात्मक रूप से कम होती है।

III. निष्कर्षः

प्रस्तुत शोध पत्र में हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि ग्रामीण प्रजनन दर को प्रभावित करने वाले अनेक घटक हैं जो प्रजनन दर को बढ़ाने अथवा घटाने का काम करता है। इस शोध पत्र में वर्णित सभी घटक ग्रामीण प्रजनन दर को प्रभावित करता है। लेकिन इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे तत्व हैं जैसे भोजन एवं आवास की कमी, आर्थिक असुरक्षा, मृत्यु दर, सामाजिक गतिशिलता, बेरोजगारी आदि भी प्रजनन दर को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण घटक है। प्रोफेसर नाग इस बात को मानते हैं कि प्रजनन दर मुख्य रूप से व्यक्ति के स्वास्थ्य तथा स्वास्थ्य संबंधी उपलब्ध सुविधाओं से प्रभावित होती है। यदि स्वास्थ्य सुविधाओं में विस्तार होता है तो संतान उत्पन्न करने की शक्ति में वृद्धि होती है। पिछले कुछ वर्षों में लगातार स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं में वृद्धि होने से मृत्यु दर में कमी आई तथा प्रजनन शक्ति मजबूत होने से जनसंख्या में अधिक वृद्धि हुई।

संदर्भ सुची

1. *कुमार, डॉ0 वि0 एवं गुप्त, डॉ0 शिवनारायण, जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा0 लि0, वर्ष 2006, पृ0सं0 218*

2 Angeles, L. (2010). Demographic transitions: Analyzing the effects of mortality on fertility. Journal of Population Economics, 23(1), 99–120.

*3. Adhikari R. Demographic, socio-economic, and cultural factors affecting fertility differentials in Nepal. BMC Pregnancy Childbirth. 2010;*10(1)*:19. doi: 10.1186/1471-2393-10-19*

4. Bongaarts, J., & Watkins, S. (1996). Social interactions and contemporary fertility transitions. Population and Development Review, 22(4), 639–682.

*5. Bongaarts J. A framework for analyzing the proximate determinants of fertility. Popul Dev Rev. 1978;*4(1)*:105–132. doi: 10.2307/1972149*

6. Cleland, J. (2001b). The effects of improved survival on fertility: A reassessment. In R. A. Bulatao & J. B. Casterline (Eds.), Global fertility transition. Population and Development Review 27(Suppl.), 60–92.

7. Caldwell, J. (1980). Mass education as a determinant of the timing of fertility decline. Population and Development Review, 6(2), 225–255.

8. Kravdal, O. (2002). Education and fertility in sub-Saharan Africa: Individual and community effects. Demography, 39(2), 233–250.

9. Lloyd, C. (2003). Education. In Demeny, P. & McNicoll, G. (Eds.). (2003). Encyclopedia of population (pp. 278–283). Macmillan.

10. Schultz, P. (1994). Human capital, family planning and their effects on population growth. American Economic Review, 84(2), 255–260.

IJMRA